आधुनिक भारतीय समाज में लोकतांत्रिक चेतना

डॉ.हरिचरण मीना

व्याख्याता समाजशास्त्र विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सवाईमाधोपुर

वर्तमान में हम ज्ञान आधारित समाज (Knowledge Society) में रह रहे हैं। यहाँ ज्ञान से तात्पर्य सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबन्धन के ज्ञान से है। कृषि प्रधान समाज में मानव की महत्ता थी। औद्योगिक समाज में यंत्र की प्रमुखता थी। लेकिन सूचना प्रधान इस ज्ञानवान समाज में बौद्धिकता की प्रधानता होती है। आज के इस बौद्धिक युग में सामाजिक सम्बन्ध भावनात्मक होने के बजाय बौद्धिक होने लगे हैं। भूमण्डलीकरण ने पूरी दुनिया को गाँव का रूप दे दिया है। विश्व का यह एकीकरण आर्थिक दृष्टि से है। पर यह इस दृष्टि से सांस्कृतिक भी है कि भूमण्डलीकरण की इस प्रक्रिया में एक उपभोक्तावादी संस्कृति को विकसित देशों द्वारा पूरे विश्व में फैलाने का प्रयास किया जा रहा है। आधुनिक भारतीय समाज इन सभी कारकों से प्रभावित है। इस पृष्ठभूमि में समाज की लोकतान्त्रिक चेतना की स्थिति का मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है क्योंकि लोकतन्त्र की सफलता राजनीतिक संस्कृति पर निर्भर करती है। राजनीतिक संस्कृति किसी देश के अन्तगत लोगों के विश्वास और मल्यों का समूह होती है जो कि राजनीति को प्रभावित करते हैं। राजनीतिक संस्कृति के निर्माण में समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

मुख्य शब्द – लोकतांत्रिक चेतना, भूमण्डलीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति, सोशल मीडिया, उदारीकरण।

उद्देश्य – आधुनिक भारतीय समाज में लोकतांत्रिक चेतना के बारे में चर्चा करना।

प्रस्तावना

व्यक्ति और समाज दोनों एक–दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी न होकर पूरक हैं। अरस्तु ने तीसरी शताब्दी ई.पूर्व में ही कह दिया था कि वह व्यक्ति जो समाज में नहीं रहता है या तो पशु होता है या देवता। उदारीकरण के वर्तमान युग में व्यक्तिवाद की बढ़ती प्रवृत्ति ने समाज और व्यक्ति को द्वन्द्व के बीच ला खड़ा किया है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है। लोकतन्त्र केवल एक राजनीतिक व्यवस्था ही नहीं है, वरन् यह एक जीवन शैली भी है। लोकतन्त्र का अपना एक दर्शन भी है। लोकतन्त्र में अधिकारों के साथ ही साथ इस बात का भी महत्त्व है कि हम दूसरों के साथ वैसा व्यवहार न करें जैसा व्यवहार हम अपने साथ किया जाना पसन्द नहीं करते। जिस देश के नागरिक समुदाय में यह लोकतान्त्रिक चेतना जितनी विकसित है वहाँ लोकतन्त्र की जड़ें उतनी ही मजबूत हैं। इस पृष्ठभूमि में वर्तमान भारतीय समाज में लोकतान्त्रिक चेतना का अवलोकन करना आवश्यक हो जाता है। आधुनिक भारतीय समाज में व्यक्तिवाद का विकास तो हुआ है, पर इस व्यक्तिवाद को लोकतान्त्रिक चेतना नहीं कहा जा सकता। स्वतन्त्रता के साथ ही साथ समानता और भ्रातृत्व का भाव विकसित होने पर ही लोकतान्त्रिक चेतना पूर्ण होती है।

संवैधानिक प्रावधानों द्वारा स्वतन्त्रता समानता व भ्रातृत्व के विचारों को लागू करने का वातावरण तो बनाया जा सकता है, पर इसकी व्यावहारिकता उन व्यक्तियों पर निर्भर है जो व्यवस्था को संचालित करते हैं। लोकतन्त्र के सफल संचालन के लिए ऐसे लोकतान्त्रिक व्यक्तित्वों की आवश्यकता होती है जो संयमी व उदार हृदय वाले हों, सामंजस्य व समरसता में विश्वास रखते हों, सहनशील हों, साथ ही जागरूक व

मानवीय मूल्यों के प्रति आस्थावान हों। एक लोकतान्त्रिक सामाजिक परिवेश भी इसके लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए यदि समाज में धन और भौतिक समृद्धि की प्रतिष्ठा है तो व्यक्ति येन–केन–प्रकारेण इसे हासिल करने का प्रयास करेगा लेकिन यदि समाज में ज्ञान और मूल्यों की प्रतिष्ठा है तथा येन–केन–प्रकारेण धन कमाने वालों के प्रति तिरस्कार है तो भ्रष्टाचार की समस्या पर स्वतः ही लगाम लग जाएगी।

आधुनिक भारतीय समाज के चरित्र का यदि हम अवलोकन करें तो कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु हमारे सामने आते हैं

- आधुनिक भारतीय समाज में परम्परावादी तत्त्व भी विद्यमान हैं । इसलिए पूरी समीक्षा के लिए आधुनिक परिस्थितियों के साथ ही साथ परम्परावादी पक्ष की भी समीक्षा करनी आवश्यक है।
- लोकतान्त्रिक दृष्टि से एक बात सही होती है और सामाजिक दृष्टि से दूसरी बात। ऑनर किलिंग जैसी वीभत्स घटनाएँ इसी विसंगति का उदाहरण हैं। परम्परावादी सामाजिक मान्यताएँ व रीति–रिवाज व्यक्ति को अपने विवेक के इस्तेमाल का अवसर ही प्रदान नहीं करते। बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि के लिए भी यह बात लागू होती है।
- कन्या भ्रूण हत्या जो कि आधुनिक भारतीय समाज का कलंक है, इस बात की ओर संकेत करती है कि जब परम्परावादी बुराइयों को आधुनिक तकनीक का प्रश्रय मिला तो उसका रूप कितना वीभत्स हो गया। पढ़े–लिखे और तथाकथित बुद्धिजीवी व शहरी कहलाने वाले वर्ग ने आधुनिक तकनीक के बल पर इस दुष्कृत्य को बहुतायत से किया। आधुनिक प्रौद्योगिकी ने इस अपराध को और अधिक आसान कर दिया है।
- वह समाज रुग्ण होता है, जहाँ एक ओर अर्थ का अभाव और दूसरी ओर अत्यधिक अर्थ होता है। उदारीकरण ने अमीरी और गरीबी के इस अन्तराल को और भी अधिक विकट बना दिया है।
- वैश्वीकरण और उदारीकरण के प्रभाव से भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन आए हैं, पर उनकी दिशा लोकतान्त्रिक नहीं है। भारत ने सदिया से पूरे विश्व को अपना कुटुम्ब माना, पर वैश्वीकरण के इस युग में दुनिया भारत को एक बाजार के रूप में देखती है।
- लोकतन्त्र के अन्तर्गत सभी को अपनी–अपनी सांस्कृतिक चेतना के साथ जीने का हक होता है, पर उपभोक्तावादी संस्कृति ने इन विभिन्न संस्कृतियों के समक्ष चनौती खडी कर दी है। व्यक्ति को समझकर वस्तु समझा जा रहा है। इस तरह आधुनिक भारतीय समाज की लोकतान्त्रिक चेतना के समक्ष आन्तरिक और बाहर चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

यहाँ तेजी से उभरते सोशल मीडिया के प्रभावों का मूल्यांकन करना भी आवश्यक है। सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव तो कई हैं, पर भारतीय समाज में लोकतान्त्रिक चेतना उत्पन्न करने में सोशल मीडिया ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिस तरह से अरब स्प्रिंग के पीछे सोशल मीडिया की मुख्य भूमिका रही उसी तरह से भारतीय समाज में भी उभरते जन आन्दोलनों में सोशल मीडिया का महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है। चाहे अन्ना हजारे के नेतृत्त्व में इण्डिया अगेन्स्ट करेप्शन का भ्रष्टाचार के विरुद्ध जन लोकपाल लाने का आन्दोलन हो, चाहे स्वप्रेरित दामिनी और गुड़िया के लिए किया गया संघर्ष हो, सोशल मीडिया ने भारतीय समाज को लामबन्द किया है। समाज में सकारात्मक राजनीतिक चेतना उत्पन्न की है। लोकतन्त्र की सफलता के लिए यह एक आशावादी विकल्प है।

आधुनिक भारतीय समाज में लोकतान्त्रिक चेतना उत्पन्न करने हेतु कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण सुझाव निम्नलिखित हैं –

❖ परिवारों से मिलकर समाज बनता है। इसलिए परिवार के स्तर पर ही मैत्रीपूर्ण और उदारवादी भावनाओं के विकास पर ध्यान, दिया जाना आवश्यक है। पारिवारिक स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया अधिनायकवादी न होकर लोकतान्त्रिक हो । विचारों को एक–दूसरे पर थोपा न जाए वरन् एक–दूसरे के विचारों का सम्मान किया जाए। वाद–विवाद को अनुचित और अशोभनीय न मानकर इसके महत्त्व को स्वीकार किया जाए। इस तरह से पारिवारिक जीवन लोकतान्त्रिक हो।

❖ परिवार में भी लोकतन्त्र तभी पनप सकता है जब सबसे पहले ऐसे लोकतान्त्रिक व्यक्तित्वों का विकास हो जो विवेकवान, उदार सोच वाले, सन्तुलित और खुले दिल के हों। मानवाधिकारों का सम्मान करने वाले हों। उनमें स्वतन्त्रता, आत्मनियन्त्रण, निर्भयता, संयम आदि गुण हों।

❖ समाज में एकता स्थापित करने के लिए कुछ विविध प्रकार के प्रयास भी किए जा सकते हैं। जैसे अंतर्धार्मिक त्योहार मनाए जा सकते हैं। अनेक धर्मों वाली परियोजनाएं चलाई जा सकती हैं। अन्तर्रास्था चर्चाएँ करने के लिए एक राष्ट्रीय स्तर की स्वतंत्र व स्वायत्त संस्था बनाई जा सकती है जिसका प्रबन्धन आध्यात्मिक विद्वानों और प्रबुद्ध नागरिकों को सौंपा जा सकता है। कट्टरता के लिए लोकतन्त्र में कोई जगह नहीं है। इसलिए एक राजनीतिक प्रणाली के रूप में लोकतन्त्र को सफल करने के लिए पारिवारिक व सामाजिक स्तर पर उन मूल्यों का विकास करना अति आवश्यक है जो लोकतान्त्रिक है। नैतिकता का पालन करने वालों को प्रोत्साहन, प्रतिभा से ज्यादा चरित्र को महत्त्व, व्यक्ति के मन को विस्तृत करने का प्रयास, मौन की संस्कृति तोड़कर सही को समर्थन प्रदान करने की प्रवृत्ति का विकास–ये कुछ ऐसे छोटे–छोटे उपाय हैं जिनसे हम समाज में लोकतान्त्रिक जीवन शैली का विकास कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. आचार्य महाप्रज्ञ और ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : सुखी परिवार, समृद्ध राष्ट्र
2. वी.पी. वर्मा : आधुनिक भारतीय सामाजिक और राजनीतिक चिंतन
3. एम.के. गाँधी : हिन्द स्वराज
4. www.India-seminar-com